कल्पना चावला
प्रेरणा की 'पंख'

जन्म: 17 मार्च 1962
मृत्यु: 1 फरवरी 2003

भारत में जन्म लेने वाली अंतरिक्ष यात्री कल्पना चावला महिला सशक्तीकरण की एक ऐसी प्रतीक हैं जिन्होंने कल्पना से आगे की उड़ान भरी। उन्होंने एक बार नहीं बल्कि दो बार अंतरिक्ष की यात्रा की और दिखाया कि भारत की बेटियों के लिए आसमान की ऊंचाई भी कम पड़ सकती है। विज्ञान के क्षेत्र में प्रेरक इतिहास रचने वाली कल्पना चावला ने लोगों में अपने उत्साह और उमंग को बनाए रखने, बेटियों को आगे बढ़ने एवं अकल्पनीय ऊंचाइयों को छूने के लिए प्रेरित किया। कोलंबिया अंतरिक्षयान दुर्घटना में भले ही वह हमें छोड़ कर चली गई लेकिन दुनिया भर में लाखों युवाओं के लिए आज भी बनी हैं मिसाल और प्रेरणा...

दुनिया से जाने के बाद भी जिन लोगों को प्रेरणा का स्रोत माना जाता है उसमें भारतीय मूल की नासा की अंतरिक्ष वैज्ञानिक रहीं कल्पना चावला का नाम भी शामिल है। पिता बनारसी लाल चावला और मां संज्योती के घर 17 मार्च 1962 को हरियाणा के करनाल में जन्म लेने वाली कल्पना यहीं पली-बढ़ी। घर में सबसे छोटी कल्पना कम उम्र से ही विज्ञान में रुचि रखती थी। अंतरिक्ष, फ्लाइट के सपने देखने वाली कल्पना की इच्छा को देखते हुए पिता ने बात नहीं टाली। उच्च शिक्षा के लिए कल्पना चावला अमेरिका चली गईं। 1988 में वह अमेरिकी अंतरिक्ष संस्था नासा से जुड़ गईं। भारत की पहली महिला अंतरिक्ष यात्री कल्पना चावला का पहला अंतरिक्ष सफर एसटीएस 87 कोलंबिया शटल के साथ 19 नवंबर 1997 को शुरू हुआ। इस उड़ान में कल्पना चावला ने करीब 372 घंटे अंतरिक्ष में बिताए और धरती के 252 चक्कर लगाए यानि 65 लाख मील की दूरी तय की।

पहली सफल अंतरिक्ष यात्रा के करीब पांच वर्ष 10 महीने बाद नासा ने एक बार फिर कल्पना चावला को अंतरिक्ष में भेजने का फैसला किया। 16 दिवसीय मिशन की सात सदस्यीय टीम में उन्हें महत्वपूर्ण स्थान दिया। भारत की बेटी कल्पना चावला ने 16 जनवरी 2003 को स्पेस शटल कोलंबिया से अंतरिक्ष में दूसरी बार उड़ान भर भारत का नाम रौशन किया। हालांकि, यह उनकी अंतिम उड़ान साबित हुई क्योंकि कोलंबिया शटल अंतरिक्ष मिशन पूरा कर जब वापस लौट रहा था तब पृथ्वी की कक्षा में प्रवेश करते समय 1 फरवरी 2003 को यह टूटकर बिखर गया। यान में सवार अन्य छह सदस्यों के साथ कल्पना चावला की भी मौत हो गई। कल्पना चावला भले ही आज हमारे बीच नहीं हैं लेकिन आज भी अंतरिक्ष की ओर देखती बेटी कल्पना चावला बन देश का नाम रौशन करना चाहती है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जब अमेरिका गए थे तब उन्होंने 6 जून 2016 को अंतरिक्ष शटल यान कोलंबिया स्मारक पर कल्पना चावला को पुष्पांजलि अर्पित की। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 28 जनवरी 2018 को अपने मासिक रेडियो कार्यक्रम 'मन की बात' में कल्पना चावला को याद करते हुए कहा था, "यह सबके लिए दुःख की बात है कि हमने कल्पना चावला को इतनी कम उम्र में खो दिया लेकिन उन्होंने अपने जीवन से पूरे विश्व में खासकर भारत की हजारों लड़कियों को यह संदेश दिया कि नारी शक्ति के लिए कोई सीमा नहीं है। इच्छा और दृढ़ संकल्प हो, कुछ कर गुजरने का जज्बा हो तो कुछ भी असंभव नहीं है।" ●